

18 गणित को ऐसे भी पढ़ा सकते हैं

एच. के. शुभा

अभिभावकों का विस्थापन (माइग्रेशन) बच्चों के सामने बहुत सारी चुनौतियाँ पेश करता है। सबसे बड़ी चुनौती होती है एक निहायत ही नए, अपरिचित माहौल में ढलने की। नए वातावरण के साथ परिचय स्थापित करने में बच्चों को बहुत श्रम करना पड़ता है। इस जटिल परिस्थिति में, बच्चों को बहुत थोड़े–से समय में सार्थक शिक्षा देने के लिए उनमें उत्सुकता और उत्साह जगाना जरूरी होता है।

ऐसे बच्चों को सार्थक शिक्षा देने की जरूरतों को समझने के लिए अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन द्वारा निर्माण कार्यों में लगे विस्थापित मजदूरों के बच्चों के लिए 2007 में दो प्रयोगात्मक स्कूल आरम्भ किए गए थे। इन स्कूलों का एक उद्देश्य ऐसे बच्चों के लिए उत्कृष्ट शिक्षा का एक दोहराया जा सकने योग्य और टिकाऊ मॉडल तैयार करना भी है।

हमारे पास समर्पित शिक्षकों की एक महत्वपूर्ण टीम है जो इन स्कूलों की लगभग शुरुआत से ही इनके साथ रही है। उन्होंने अनेक शिक्षाविधियों और पद्धतियों के साथ प्रयोग किए हैं और कभी–कभी अत्यन्त नवाचारी और कारगर समाधान पेश किए हैं। इन्हीं में से एक गतिविधि मैं आपसे साझा करना चाहती हूँ। यह है बच्चों को पैसों के माध्यम से जोड़ और घटाने की शिक्षा देना साथ ही उनमें पैसे को बचाने और उसको बरतने की आदत डालना।

पहले मैं आपको बच्चों के स्कूली बचत बैंक की पृष्ठभूमि से अवगत करा दूँ। मजदूर अभिभावक अपने बच्चों को इस शर्त पर स्कूल भेजने के लिए राजी हुए थे कि वे अपने छोटे भाई–बहनों को भी साथ ले जा सकते थे। इसके अलावा, स्कूल मजदूरों के पड़ाव के काफी करीब था जहाँ से बच्चे अपने घरों पर नजर रख सकते थे।

शुरू में तो बहुत से बच्चों ने, इसके बावजूद कि वे यह जानने को काफी उत्सुक थे कि क्या हो रहा है कक्षा में आने से मना कर दिया। तब अभिभावकों ने उनको स्कूल जाने को राजी करने के लिए जेब–खर्च के बतौर एक–दो रुपए देना शुरू किया। ये ज्यादातर सिक्के होते थे।



मजे की बात यह थी कि कई बच्चे इन सिक्कों को अपनी जेबों में रखने की बजाय अपने मुँह में रखा करते थे। उनको लगता था पैसे रखने के लिए वह सबसे सुरक्षित जगह है! धीरे–धीरे वे ये सिक्के अध्यापकों को देने लगे जिन्हें वे शाम को घर जाते समय वापस ले लेते थे।

हमने उनको समझाना शुरू किया कि वे पैसे बचाएँ और बाल बनवाने या जूते खरीदने या जब अपने कभी गाँव जाने जैसी जरूरतों पर उनको खर्च करें।

हमने हर बच्चे की अलग–अलग अकाउण्ट

पुस्तिकाएँ रखनी शुरू कर दीं। हालाँकि अध्यापकों पर विश्वास कायम करने में उनको थोड़ा वक्त लगा, लेकिन दो–तीन बच्चों को इस तरह पैसे बचाते और जरूरत पड़ने पर उनका इस्तेमाल करते देख हर किसी ने वैसा ही करना शुरू कर दिया। हर दिन असेम्बली के बाद बच्चे अपनी–अपनी अकाउण्ट पुस्तिकाओं के साथ गोल घेरा बनाकर बैठ जाते, पैसे को गुल्लक में डालते और अध्यापक से वह पैसा अपनी पुस्तिकाओं में दर्ज कराते। हर किसी को जानकारी होती कि उनके 'अकाउण्ट' में कितना पैसा सुरक्षित है।

बाद में अध्यापकों को लगा कि इस चीज को वे एक शैक्षणिक अभ्यास में बदल सकते हैं।

लक्ष्य

1. संख्याओं के क्रम को समझना
2. ज्यादा, कम और बराबर की अवधारणाओं को समझना
3. वास्तविक जीवन में जोड़ और घटाना की समस्याओं को समझना
4. कैलेण्डर की अवधारणा को समझना

जीवन कौशल

पैसे को बचाने और उसका सार्थक इस्तेमाल करने की अहमियत की समझ

गतिविधि

अध्यापक और बच्चे घेरा बनाकर बैठते हैं और गुल्लक को बीच में रख लेते हैं। अध्यापक एक बच्चे को, जो पैसे लेकर आया है, बुलाता है और उससे पूछता कि उसके पास कितना पैसा है। बच्चे के जवाब के बाद वह उससे कहता है कि वह सारे बच्चों को दिखाकर पैसा गुल्लक में डाले। अगर उसके पास एक से ज्यादा सिक्के या नोट हैं तो अध्यापक बच्चों के एक समूह से कहता है कि वे उनके मूल्य को जोड़ें और बताएँ कि उस बच्चे के पास कितने पैसे हैं। अब बच्चों से कहा जाता है कि वे उसकी अकाउण्ट पुस्तिका में देखकर बताएँ कि उसके पास पहले से कितना पैसा है और फिर उसमें वह पैसा जोड़ें जो वह बच्चा जमा करने लाया है। उनके जवाब मिलने के बाद वह उसकी अकाउण्ट पुस्तिका में तारीख और पैसे की मात्रा दर्ज करता है। यही गतिविधि उन सारे बच्चों के मामले में जारी रखी जाती है जो जमा करने के लिए पैसे लाए हैं।

इसी तरह जो बच्चे अपने अकाउण्ट से पैसे निकालना चाहते हैं वे अध्यापक को बताते हैं कि उनको कितने पैसे की जरूरत है और अपने समूह को पैसे निकालने की वजह बताते हैं। अध्यापक बच्चे को दिया जाने वाला पैसा बच्चों को दिखाता है और उनसे पूछता है कि इसके बाद उस बच्चे के अकाउण्ट में कितना पैसा बचता है। अध्यापक बच्चों से चर्चा करने के बाद उनकी अकाउण्ट पुस्तिकाओं में सारा विवरण और तारीख दर्ज करता है। इसी के साथ हर बच्चे के लिए जरूरी होता है कि वह इस विवरण को मंजूर करते हुए उस पर अपना नाम लिखे।



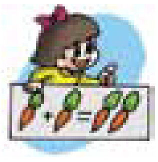
उपलब्धि

इस प्रक्रिया में बच्चे मुद्रा को पहचानना शुरू कर देते हैं और धीरे–धीरे जोड़ और घटाना की क्रियाओं से परिचित होने लगते हैं। पुराने बच्चे अकाउण्ट पुस्तिकाओं में विवरण दर्ज करने और पैसे के रखरखाव में अध्यापकों की मदद

करते हुए इस गतिविधि में सहयोग करने लगते हैं। बच्चों को इस प्रक्रिया में भाग लेने में मजा आता है।

आज बच्चे अपना आधा पैसा स्कूल में जमा करते हैं और शेष पैसे से पास की गुमटी से अपने लिए कैण्डी खरीदते हैं।

बचत का यह पैसा अध्यापकों द्वारा विनिमय, जोड़, घटाना, गुणा और भाग जैसी गणित से सम्बन्धित कई अवधारणाओं को पढ़ाने का माध्यम बन रहा है। यह देखकर अध्यापकों को भारी सन्तोष मिलता है कि बच्चे इतने अच्छे तरीके से सीख रहे हैं, और वह भी उस स्थिति में जबकि वे इतने कम समय से उनके साथ हैं।



***शुभा** 2007 से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ काम कर रही हैं। इन दिनों वे यादगीर स्थित अज़ीम प्रेमजी स्कूल के प्राचार्य का मार्गदर्शन करने के साथ–साथ बंगलौर के दो विस्थापित मजदूर स्कूलों का संचालन कर रही हैं। वे 'विस्थापित मजदूरों के बच्चों के लिए शिक्षा' कार्यक्रम के साथ आरम्भ से ही सम्बद्ध हैं। उनसे shubha@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : मदन सोनी*